□□□□□ □□□□

जनसत्ता 30 जून, 2014 : पछिले दनिों दशरथ मांझी केघर जाना हुआ। यह जानने केइरादे केसाथ कि अपनी पत्नी केप्यार में जसि पहा। को काट कर उन्होंने रास्ता बनाया था, उसकेदोनों ओर केमांझी परविारों का क्या हाल है। दशरथ मांझी का गांव सुरखियों में रहा है, जसिकेकारण गांव में सुवधिाओं केलहिाज से गुणात्मकस्तर पर फर्कआया है। पहा। केदूसरी ओर केगांव में मांझी परविार की स्त्रयिों से मलिना हुआ। लगभग सभी मर्द रइंट भट्ठे पर काम करने ग। थे। गांव में बजिली-पानी की सुवधिा नहीं और न मनरेगा केतहत पूरा कम। पहा। के□ कछोर पर दशरथ मांझी प्रतीकहैं, तो दूसरे छोर पर पुलसि की गोली से मारे ग। माओवादयिों की 'शहीद समाधि□'

दशरथ मांझी केगांव जाते हु। तबाह पहा□यिां दखिीं, जनि्हें लगातार डायनामाइट से नष्ट कयिा जा रहा है। गया की पहचान हैं बनिा पे। केपहा□, बनिा पानी की नदयिां, पंडे और पडि। उन नष्ट होती पहा□यिों ने मुझे अपने साथ केरश्तिों की यादों केकोलाज केबीच ख□ा कर दयिा। वष्णिुपद इलाकेमें रहते हु। मैं और मेरे □कदोस्त अक्सर श्मशान घाट पर बैठते। जलती चताओं को देखते, फरि उतर जाते फल्गू नदी में। लक्ष्य होता था सामने पहा। का □कटीला। टीले केपास की नदी को सीता कुंड कहा जाता है और उसकेऊपर □कमंदरि बना है, जहां पत्थर से बनी कलाकृत्तिमें दशरथ के□ कहाथ पर पडि दर्शाया गया है। मथि है कि सीता ने यहां राम की अनुपस्थतिमें दशरथ को पडि दान कयिा था, लेकनि राम को वशि्वास नहीं हुआ। सीता केगवाह भी □क□ककर मुकरते ग□□ क्रुद्ध सीता ने उन गवाहों को शाप दे दयिा, जसिसे इस शहर की नदी, पहा। आदि केचरत्रि तय हु□□ यहां मैं चूंकि पहा□ों को याद कर रहा हूं, इसलि। कसिी धार्मकि मन को दुखी नहीं करना चाहूंगा, इन मथिों की कोई स्त्रीवादी व्याख्या करके। इस वस्तिृत व्याख्या में भी जाने का अवसर नहीं है कि कैसे बौद्ध धर्म केखलिाफ वैष्णव उल्लास (आतंक नहीं कह रहा हूं) केप्रतीकहैं वष्णिुपद, उसकेआसपास केइलाकेऔर उससे जुि मथि!

हम दोनों मत्रिों का श्मशान घाट केबाद का अगला प□ाव होता था ब्रह्मयोनी पहा□□ उस पर हम च□ते तो थे उस पर बनी सी□ियों से, लेकनि उतरते थे पत्थरों से गुजरते हु। जो पास केकसिी गांव में उतार ले जाते। वहां से चल कर हम पहुंचते थे मंगला गौरी की पहा□ी पर जो अब पहा□ी कम, मंदरि ज्यादा है। मथि है कि वहां सती केस्तन कट कर गरि थे, वष्णिु केचक्र से। इसी संदर्भ में नीलमिा सन्हिा की कहानी 'मंगलागौरी' याद आती है।

गया केकरीब जहानाबाद जलि में अपने गांव से जब भी मैं शहर में दाखलि होता था तो शहर की सीमा पर प्रेतशीला-रामशीला पहा। स्वागत करते थे। यादों केइस कोलाज में □कप्रसंग है, गया-नवादा मार्ग पर कटते पहा□ों के□ कटीले पर हंगरी की कुख्यात कवति 'ग्लूमी संडे' का पाठ। यहां से गुजरते हु। दशरथ मांझी केघर जाया जाता है। हम तब 'कदंबनिी' में 'ग्लूमी संडे' केबारे में छपी □करपट को पहा। पर बैठ कर प□ रहे थे, जसिकेमुताबकिकई लोग इस कवति को प□ते हु। या प□ कर आत्महत्या कर चुकेहैं। खुद इसकेकवि ने भी रचना केकई साल बाद आत्महत्या कर ली थी। हालांकि यह सद्धि नहीं है कि वे आत्महत्या□ इसी कवति केपाठ केकारण हुई थीं। बीबीसी ने इस कवति केप्रसारण को कुछ दनिों केलि। रोकदयिा था।

खैर, पत्रकि में इस कवति का अंश छपा था। हमने उसे प□ कर खत्म कयिा ही था कि 'भागो' की आवाज आई। दरअसल, वहां पहा। डायनामाइट से उ□ाया जाना था और कोई हमें चल्लि ा कर कह रहा था कि भागो, पत्थर उ□ा□ जाने वाले हैं। हम जान बचा कर भागे। मजदूरों केलि। बने □कशेड तक हमारे पहुंचते ही वस्फिोट शुरू हो ग□□ पत्थर का □कटुक□ा भी हमारी मौत का इंतजाम कर देता। बहुत दनिों तकहम मत्रि हंसते थे कि 'ग्लूमी संडे' प□ने केबाद आत्महत्या से तो नहीं, लेकनि पत्थरों से हमारी जान जरूर चली जाती।

दशरथ मांझी के घर जाते हु इन यादों के कोलाज से क सवाल बनता है क उनके बना रास्ते के ल उम ते लोग क्यों नहीं इन खत्म होते पहा ों के बारे में सोचते है! दशरथ मांझी और उनका परिवार इन्हीं पहा ों में पले-ब ये पहा उस इलाके के जीवन है

फेसबुक पेज को लाइक करने के ल क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के ल क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta